''प्राथमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन''

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्धक का प्रारूप

शिक्षा संकाय

शोध निर्देशक

डॉ. मीनाक्षी मीणा

सहायक आचार्य

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर।

शोधकर्ता :

दिव्या चण्डहोक

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

2017

CERTIFICATE BY SUPERVISOR

Certified that:-

1. I am willing to guide the research work of Mrs. Divya Chandhok on the above subject if She registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge the subject selected has not been studied so far in any university.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.
5. Necessary facilities are available in the department for the above research work (Certificate from Principal/Head University Department with regards to facilities available is enclosed).
6. I have ...08........ Research candidate registered under my supervision and the serial no. of this candidate whose application being forwarded registration is ....
7. The candidate is not a close relation (the term close relation is defined in examination ordinance of the university).

Meenakshi 30.11.17

Signature of the Supervisor with date

Assistant Professor
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
Regional Institute of Education, AJMER

Certified that the available facilities will be extended to Mrs. Divya Chandhok for research work If She registered for Ph.D.

30/11/17

विभागाध्यक्ष-शिक्षा
Head Deptt. of Education
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
Regional Institute of Education
अजमेर (राज०) Ajmer (Raj.)

Signature of Principal/Director of the Institute with date

Principal
क्षे. शि. सं. अजमेर
R. I. E. AJMER

Signature of the Supervisor with date.

Appendix - IV "A"

Format for outline (Synopsis) of Proposed Research work

(To be supplied in four copies)

(Reference Ord. 124.11)

1. Name of Scholar (In English) : Divya Chandhok

   (In Hindi) : दिव्या चण्डहोक

2- Title of theResearch work :

   (in English) A STUDY OF JOB SATISFACTION AMONG ELEMENTARY SCHOOL TEACHER IN RELATION TO THEIR PERSONALITY AND LEVEL OF ASPIRATION.

   (in Hindi) : प्राथमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन

3 Location :

   i) Institute / department where the work is to be done: Department of Education RIE.

   ii. Geographical area of Investigation, if any : Ajmer

4. Imporatant of Proposed investigation, Objective

5. Review of (Work already done on the subject of proposed Research study.)

6. Research Gap

7. Major Hypothesis, if any

8. Material and method/ research methodology

9. List of Referances

Divya 28.11.17

Signature of the Candidate with date

Approved

Meenakshi 30.11.17

Signature of Supervisor with date & seal

सहायक-आचार्य
Assistant Professor
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
Regional Institute of Education, AJMER

TABLE OF CONTENTS

S.No.	CONTENTS	PAGE
1	Introduction, importance of proposed investigation , Objectives	
	1.1 Introduction, Importance of proposed investigation	1 - 3
	1.2 Objectives of the study	4
	1.3 Significance of the study	5-6
2	Review of the work already done on the subject of purposed research study	7 - 10
3	Research Gaps identified in the proposed field of investigation	11
4	Major Hypothesis	12
5	Material and methods/research methodology	
	5.1 An Operational definiteness of key terms	13
	5.2 Research design	14
	5.3 Tools to be used	15
	5.4 Statics of analysis	15
	5.5 variable	15
	5.6 Delimitation of the study	15
	5.7 Scheme of chapterization	16-17
6	References	18 - 19

4. INTRODUCTION IMPORTANCE OF PROPOSED INVESTIGATION AND OBJECTIVE

परिचय शोध समस्या का महत्व एवं उद्देश्य

4.1 परिचय शोध समस्या का महत्व

आदि काल से ही शिक्षा सभ्यता का आधार रही है। शिक्षा के बिना व्यक्ति का विकास समूचित दिशा में नहीं हो सकता है। भारतवर्ष में शिक्षा की महत्ता आदि काल से ही रही है। मानव के विकास हेतु शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। शिक्षा शब्द संस्कृत के शिक्षा, धातु से मिलकर बना है जिसका अर्थ ''ज्ञान प्राप्त करना'' विद्या शब्द संस्कुत विद् धातु से मिलकर बना है जिसका अर्थ ''जानना या ज्ञान की प्राप्ति''

डॉ. अलतेकर के अनुसार वैदिक काल से ही भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सच्चे मार्ग का प्रदर्शन करती है। शिक्षा मानव की मनोवृत्तियों, ज्ञान व अभिरूचियो व क्षमताओं का विकास कर मानव को बदलती है तथा उन परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको बदलने की शक्ति प्रदान करती है। अर्थात ''शिक्षा केवल मानव को केवल ज्ञान ही प्रदान नही करती है बल्कि उसके व्यवहारो, विचारो, व्यक्तित्व, आकांक्षा सम्बन्धी कारको को भी विकसित करती है।''

आज के वैज्ञानिक युग में मानव ने जो कुछ उपलब्धियाँ प्राप्त की तथा जिन्हें पाकर वह अपने को गौरान्वित महसूस करता है उन्ही उपलब्धियों में आज मानव के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। ऐसी परिस्थतियों में शिक्षा की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि शिक्षा ही मनुष्य को अपने अस्तित्व को बनाये रखने का रास्ता दिखा सकती है।

शिक्षा की प्रक्रिया में जहां प्रकृतिवादियों बालक को महत्वपूर्ण माना है वहीं आदर्शवादियों ने शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वास्तव में शिक्षा की प्रक्रिया के तीन आधार शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम तीनों अति आवश्यक है। परन्तु गहराई से विचार किया जाये तो शिक्षा का प्रमुख आधार शिक्षक ही है। शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षक जिन बालको को शिक्षा देता है वे बच्चे ही कुल राष्ट्र, का निर्माता होते है। शिक्षक ही है जिसने बौद्धिक परम्पराओं व तकनीकी कौशल को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाकर देश के लिए नई पीढ़ी तैयार करते है। यहीं नई पीढी हमारे राष्ट्र व समाज की निर्माता है समाज व राष्ट्र के भविष्य

इन्हीं नई पीढ़ी के हाथ में होता है। शिक्षक समाज का आईना है जिस समाज में शिक्षक का जितना अधिक सम्मान होता है उतना ही सभ्य व विकसित समाज माना जाता है। भारत देश में शिक्षक को सम्मान देने की प्राचीन काल से ही परम्परा रही है। शिक्षक, शिक्षा व समाज को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का महत्व प्राथमिक स्तर ही शिक्षा से लेकर महाविद्यालय तक स्तर तक है। प्राथमिक स्तर पर ही शिक्षक को बालक का रूप निर्धारित करना पड़ता है। एक कुम्हार की तरह चाक पर चढ़ी मिट्टी को उपयोगी स्वरूप प्रदान करना पड़ता है। इसके विकास में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्राथमिक शिक्षा बच्चों के लिए नींव का कार्य करती है। शिक्षा रूपी इमारत तभी ही मजबूत हो सकती है जब बच्चो की प्राथमिक शिक्षा रूपी नींव मजबूत हो।

इसीलिये भारतीय संस्कृति में शिक्षक के दो स्थानों में देखा जाता है जिन्हें आध्यात्मिक गुरू और लौकिक गुरू के रूप में परिभाषित किया जाता है जीवन में अगर शिक्षक नही है तो शिक्षा सम्भव ही नहीं है।

एक शिक्षक पूर्ण ईमानदारी से तभी कार्य कर जब उसे व्यवसायिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है। व्यावसायिक सन्तुष्टि व्यक्ति की अपनी मनौवैज्ञानिक, पर्यावरणीय, तथा भौतिक परिस्थितियों के प्रति सकरात्मक अनुभव है। जब व्यक्ति किसी कार्य में लगता है तो उस कार्य में वह अपनी आधारभूत वैयक्तिक एवं सामाजिक आवश्यताओं की सन्तुष्टि भी प्राप्त करना चाहता है सन्तुष्टि न मिलने पर उसके मन में कार्य के प्रति ऋणात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न हो जाती है फलस्वरूप वह पूर्ण मनोयोग से उस कार्य का सम्पादन नही कर पाते है।

व्यावसायिक सन्तुष्टि व्यक्ति विशेष की उस मनोवृत्ति को प्रस्तुत करती है जो किसी कार्य विशेष के सम्पादन के फलस्वरूप अभिव्यक्त होती है और प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कार्य के परिणाम को प्रभावित करती है।

यहाँ कार्य सन्तुष्टि से तात्पर्य-''कार्य करने वाले व्यक्ति की ससुष्टि से होता है। कार्य सन्तुष्टि एक व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक व सामाजिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि का स्त्रोत होती है। जिसका कार्य करने वाले व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

मास्लाव (1954) के अनुसार- आधारभूत मानवीय आवश्यकताओं में व्यक्ति की छः प्राथमिकाएँ होती है उनमें मानसिक आवश्यकता का आधार तैयार करती है। मानसिक आवश्यकता सभी आवयकताओं से महत्वपूर्ण है जब वह मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त कर लेता है तो वह अन्य आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की कोशिश करता है जो निम्न क्रम में हो सकती है जैसेः- सुरक्षा, प्यार और रूप की। इस प्रकार सन्तुष्टि का परिणाम इस प्रकार की आवश्यकताओं को प्राप्त करना होता है।

''ब्रूम के अनुसार (1964)''-आर्थिक और प्रेरणात्मक ये दो प्रकार की शर्ते होती है जिनके अन्तर्गत व्यक्ति काम करता है।''

ब्लूम व नेलर- Job satifaction is the results of various attitudes the employee holds towards his job towards related factors and towards life in general.

Mean Dixit (1993) defined as job satisfication may be difiened as an attitute with results from balancing and summation of many likes and dislike experienced in connection with the job.

4.2 प्रस्तावित शोध के उद्देश्य (OBJECTIVE OF THE STUDY)

किसी भी शोध कार्य को शुरू करने से पूर्व उसके उद्देश्यों का निर्धारण शोध की स्पष्टता की दृष्टि से आवश्यक है बिना किसी उद्देश्य के कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है। उद्देश्यों से उस शोध कार्य का महत्व एवं उपयोगिता बढ़ जाती है इसलिए शोधार्थी प्रस्तुत अध्ययन में ''प्राथमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं आकांक्षा स्तर का उनकी व्यवसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन'' किया जिसके अनुसार निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है।

1. प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक शिक्षकों की व्यक्तित्व विशेषताओं का उनकी व्यवसायिक सन्तुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का उनके स्वतंत्र चरो (लिंग भेद शहरी व ग्रामीण, राजकीय व गैर राजकीय, शैक्षणिक योग्यता, सामाजिक आर्थिक स्तर) के संदर्भ में अध्ययन करना।
5. प्राथमिक शिक्षकों की व्यक्तित्व का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर उनके स्वतंत्र चरो (लिंग भेद शहरी व ग्रामीण, राजकीय व गैर राजकीय, शैक्षणिक योग्यता, सामाजिक आर्थिक स्तर) के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. प्राथमिक शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर उनके स्वतंत्र चरो (लिंग भेद शहरी व ग्रामीण, राजकीय व गैर राजकीय, शैक्षणिक योग्यता, सामाजिक आर्थिक स्तर) के प्रभाव का अध्ययन करना।
7. प्राथमिक शिक्षकों की व्यक्तित्व व आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि के सम्बन्धों का अध्ययन करना।

4.3 Significance of the study अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा ही मानव जीवन की वास्तविक आधारशीला है। शिक्षा के सभी स्तरों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राथमिक शिक्षा है प्राथमिक शिक्षा रूपी नींव के ऊपर ही सम्पूर्ण शिक्षारूपी इमारत खड़ी होती हे जिस प्रकार मजबूत नींव के अभाव में मजबूत इमारत का कल्पना नहीं की जा सकती है। उसी प्रकार सुदृढ़ प्राथमिक शिक्षा के अभाव में सुदृढ़ उच्च शिक्षा की कल्पना भी नही की जा सकती। अतः शिक्षा को सुदृढ़ बनाना समाज की प्रगति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है इसके लिए हमें अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता है जो हमारे समाज का निर्माण कर सके।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि: – ''हमें ऐसे शिक्षक चाहिए जो चरित्रवान, मानसिक,रूप से उत्तम बुद्विमान, मूल्यवान नागरिक दे सकें, जिससे वह वह नागरिक अपने पैरों पर खड़ा हो सकें।''

इसके लिए अध्यापक का व्यावसायिक रूप से सन्तुष्ट होना बहुत जरूरी है क्योंकि:-

1. आज निजी संस्थाओं में अध्यापक अध्यापन कार्यो सन्तुष्ट नही है क्योंकि इन संस्थाओं के द्वारा उनको दिया जाने वाला वेतन अन्य देशों व राज्यों की तुलना में बहुत कम है जिससे अध्यापक अपने अध्यापन कार्यो के प्रति पूर्णतया सन्तुष्ट नही है और यह अपने कार्यो से विमुख होते जा रहे है।

2. शिक्षण संस्थानों में उचित वातावरण का नही होना क्योकि राजकीय संस्थानों में व निजी संस्थानों पर राजनैतिक प्रभाव अधिक बढ़ता जा रहा है स्थानान्तरण की स्थिति अध्यापकों के सिर पर लटकती रहती है।

3. वर्तमान युग में व्यक्ति का आकांक्षा स्तर भी उसकी कार्य सन्तुष्टि को प्रभावित करता है, क्योंकि उच्च शिक्षा का स्तर रखने वाले व्यक्ति अपनी पद व कार्य के अनुरूप आय व सुविधाओं से सन्तुष्ट नहीं हो पाते है। जिन अध्यापकों का आकांक्षा स्तर उच्च होता है वह अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं होते।

4. वर्तमान युग प्रतियोगिता का युग है प्रतियोगिता स्तर भी दिन प्रतिदिन उच्च होता जा रहा है यही कारण है कि उच्च शैक्षणिक योग्यता रखने वाले शिक्षक भी प्राथमिक विद्यालयों में कार्य करने के लिये मजबूर हो जाते है जिससे उच्च शैक्षणिक योग्यता व कम वेतन मिलने से उन्हें व्यावसायिक सन्तुष्टि प्राप्त नहीं होती है।

5. आज वैज्ञानिक युग है इस युग में व्यक्ति उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर को प्रात करना चाहता है परन्तु प्राथमिक विद्यालय में अध्यापकों को दिया जाने वाला वेतन इतना नही होता कि वह अपनी सामाजिक, आर्थिक स्तर को उच्च कर सकें इसी कारण से है प्राथमिक शिक्षक व्यावसायिक सन्तुष्ट नही हो पाते है।

इस कारण से अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई कि ''प्राथमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन किया जाये।

5. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

Review of work already done on the subject of proposed research study

शोध कार्य के पथ पर आगे बढ़ने के लिए पूर्व में हुए शोध अध्ययन की जानकारी होना अति आवश्यक है शोध की दिशा का निर्धारण करने में न्यादर्श के चयन में, उद्देश्य एंव परिकल्पना के निर्धारण में, उचित उपकरण के चयन में तथा उचित सांख्यिकी विधियों के चयन में सहायक होते है।

निष्कर्ष कहा जा सकता है कि सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधकार्य के लिए अति आवश्यक है। इनही तथ्यों को ध्यान में रखत हुऐ शोधार्थी ने प्राथमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित शोध अध्ययनों का गहनता से अध्ययन कर शोध को दिशा देने का प्रयास किया है।

प्राथमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित शोध अध्ययन

1 **Venkatish Kurakula** (2016) - Job satisfaction among primary school teacher with respect to - age, gender, experience.

इस शोध कार्य में प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का आयु, लिंग कार्यो के अनुभव के आधार पर अध्ययन किया गया है। यहाँ तेलगाना क्षेत्र से 334 प्राथमिक शिक्षकों को लिया गया है।

आयु, लिंग कार्यो के अनुभव के आधारपर प्राथमिक शिक्षको की व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। जिन शिक्षकों की आयु 40 व उससे अधिक थी वह 30 वर्ष वाले शिक्षकों की तुलना में व्यावसायिक सन्तुष्ट पाये गये। इसी प्रकार महिला शिक्षक पुरूष शिक्षक की तुलना में व्यावसायिक रूप से सन्तुष्ट पाये गये। जिन शिक्षकों का कार्य अनुभव 10 वर्ष से कम था वह अधिक अनुभवी शिक्षकों की तुलना में व्यावसायिक रूप से असन्तुष्ट पाये गये।

2. **Rao Nageshwar M. Samiullah S.** (2016) - Job satification and mental health among school teachers.

इस शोध कार्य का उद्देश्य आन्ध प्रदेश क्षेत्र के 240 हाई स्कूल शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि व मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना है।

इस शोधकार्य में व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं मानसिक स्वस्थ (लिंग, प्रबन्ध, समिति) पर सार्थक प्रभाव देखा गया। यहां महिला शिक्षक में पुरूष शिक्षकों की तुलना में व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर उच्च पाया गया है। इसी प्रकार से निजी क्षेत्र में कार्य करने वाले शिक्षकों उपरोक्त शोध से निष्कर्ष निकला है कि पुरूष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षकों में व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर उच्च पाया गया। साथ ही देखा गया कि आयु के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर में भिन्नता देखी गयी। जिन शिक्षकों की आयु 40 व उससे अधिक है वह 29 व उससे कम आयु वाले शिक्षकों की तुलना में व्यावसायिक सन्तुष्ट पाये गये। आये के स्तर के आधार पर अधिक आय वाले शिक्षक कम आय वालों की तुलना में व्यावसायिक रूप से सन्तुष्टि पाये गये। शैक्षणिक योग्यता में कम योग्यता वाले शिक्षकों की तुलना में अधिक योग्यता वाले शिक्षक व्यावसायिक असन्तुष्ट पाये गये।

3. **Mr. Kumar Amit** (2015) - Job satisfaction among Female teachers :- A comparative study.

इस शोध कार्य का उद्देश्य राजकीय व निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस शोध कार्य में दौ सौ हरियाणा क्षेत्र के शिक्षकों को चुना गया है।

उपरोक्त शोध कार्य में विभिन्न क्षेत्रों जैसे:– वेतन, अवसरो, विद्यालय की स्थिति आदि में राजकीय व निजी अध्यापकों के सन्तोष में बहुत अधिक अन्तर पाया गया अर्थात राजकीय अध्यापक आपने व्यवसाय से निजी विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में अधिक सन्तुष्ट पाए गए।

5. **Mrs. Rani B. Swaroopa and P. Neeraja** (2014) - Job satisfication of primary school teachers.

इस शोधकार्य का उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर अध्यापको की व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर को देखना है साथ ही यह भी देखना है कि प्राथमिक स्तर पर व्यावसायिक सन्तुष्टि को शिक्षकों की आयु, लिंगभेद, आयु, सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षणिक योग्यता, कार्यों का अनुभव प्रभावित करते है। यहाँ शोधकर्ता ने तिरूपति क्षैत्र के 64 शिक्षकों का चयन किया है जिसमें से 32 महिला शिक्षक व 32 पुरूष शिक्षकों को लिया गया है। यह शिक्षक सरकारी व निजी दोनों ही क्षेत्रों के सम्बन्धित थे।

उपरोक्त शोध से निष्कर्ष निकला है कि पुरूष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षकों में व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर उच्च पाया गया। साथ ही देखा गया कि आयु के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर में भिन्नता देखी गयी। जिन शिक्षकों की आयु 40 व उससे अधिक है वह 29 व उससे कम आयु वाले शिक्षकों की तुलना में व्यावसायिक सन्तुष्ट पाये गये। आये के स्तर के आधार पर अधिक आय वाले शिक्षक कम आय वालों की तुलना में

व्यावसायिक रूप से सन्तुष्टि पाये गये। शैक्षणिक योग्यता में कम योग्यता वाले शिक्षकों की तुलना में अधिक योग्यता वाले शिक्षक व्यावसायिक असन्तुष्ट पाये गये।

6. **Marshall Jam A.** (West Indies 2014) Principal leadership style and teacher satisfaction among a sample of secondary school teachers in barbados.

इस शोध का उद्देश्य नेतृत्व के तरीके एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि के सम्बन्ध में अध्ययन करना है साथ ही देखना कि लिंगभेद का नेतृत्व क्षमता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। यहां 200 न्यादर्श का चयन किया गया है। जो सरकारी व निजी दोनों ही क्षेत्रों से सम्बन्धित है।

उपरोक्त शोध में नेतृत्व के तरीके एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि के सम्बन्ध में सार्थक सम्बन्ध पाया गया है। यहां देखा गया कि सैकेण्डरी व सीनियर सैकेण्डरी शिक्षक प्राथमिक शिक्षकों की तुलना में व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर उच्च पाया गया। उसी प्रकार सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक निजी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर उच्च पाया गया।

7. **Dr. Sharma Priyanka and Kaur Paramjeet** (2013) A correlation of personality types and performance of the teachers trainers in the teacher training programme.

व्यक्तित्व के प्रकारो एवं प्रदर्शन के सम्बन्धों का अध्ययन करना इस शोधकार्य का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

उपरोक्त शोध में देखा गयाकि छात्र एवं छात्राओं में व्यक्तित्व के प्रकारों व उनके प्रदर्शन Performance में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात छात्र व छात्राओं में व्यक्तित्व की विशेषताऐं एक जैसी देखी गई उनमें कोई भी सार्थक अन्तर नही पाया गया।

8. **Annirah Maulana, USOP** (Malaysia 2013)- work performance and job satisfaction among teachers.

इस शोध का उद्देश्य अध्यापकों की कार्य प्रदर्शन व व्यावसायिक सन्तुष्टि को देखना है जिसके क्षेत्र आयु, लिंग, सामाजिक स्तर, उच्च शैक्षणिक योग्यता, कार्य का अनुभव, वेतन, पदोन्नति व विकास विद्यालय की नीति आदि का अध्ययन के क्षेत्र रहे है।

उपरोक्त शोध कार्य से यह निष्कर्ष निकाला कि समस्त अध्यापका विभिन्न क्षेत्रों में व्यावसायिक रूप से सन्तुष्टि पाए गए।

9. **Mr. Ghosh Madhab** (2013) - Job satisfaction of teacher working at the primary school

इस शोध कार्य उद्देश्य व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर देखना है जिसमें प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि को (पुरूष व महिला, ग्रामिण व शहरी, राजकीय व गैर राजकीय, शैक्षणिक योग्यता) इन क्षेत्रों के आधार पर अध्ययन किया गया। यहां शोधकर्ता द्वारा दक्षिण भारत के सौ प्राथमिक शिक्षकों को लिया गया है।

शोध से निष्कर्ष निकला कि राजकीय अध्यापक गैर राजकीय अध्यापको की तुलना में अपने व्यवसाय से ज्यादा सन्तुष्ट पाए गए। महिला शिक्षक पुरूष शिक्षक की तुलना में व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर उच्च पाया गया। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों में शहरी क्षेत्रों की तुलना में व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर उच्च पाया गया।

10. **Ayan Sezer** (Turkey 2010) - The relation between the level of job satisfaction and types of personality in the high school teachers.

इस शोध का उद्देश्य उच्च स्तर के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं व्यक्तित्व के प्रकार के सम्बन्धों का अध्ययन किया गया है। यहां 482 शिक्षकों का चयन किया गया है।

उपरोक्त शोध में देखा गया कि बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले अध्यापकों में अन्त:र्मुखी व्यक्तित्व वाले अध्यापकों की तुलना में व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर उच्च पाया गया।

6. Research gaps Identified in the eropased field of Investigation (Based on Review)

किसी भी समस्या पर शोध करने से पूर्व यह देखना आवश्यक हे कि विभिन्न दृष्टिकोण से समस्या का हल आवश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोण से समस्या का हल कितना उपयोगी है हम जानते है कि बालक समाज व राष्ट्र के भावी निर्माता है देश का भविष्य ऐसे बालकों के हाथों में ही है जो शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने उत्तरदायित्व को सम्भालने वाले है इन बालकों से परिवार, समाज व देश की बड़ी बड़ी आशाऐं है।

इन आशाओं को पूर्ण करने के लिए हमें कुशल अध्यापकों की आवश्यकता है क्योंकि अध्यापक एक कुशल कलाकार की भांति कार्य करता है अध्ययन उसकी कला है और बालक कच्चा माल है जिससे माध्यम से उसे अपनी कला की अभिव्यक्ति करनी होती है इसके लिए अध्यापक का अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट होना अति आवश्यक है क्योंकि जब तक अध्यापक व्यवसाय से सन्तुष्ट नही होगा तब तक पूर्ण ईमानदारी से कार्य नही कर पाएगा। शिक्षक के बिना छात्र के विकास की कल्पना नही की जा सकती है और विशेष रूप से प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के बिना क्योंकि प्राथमिक शिक्षा रूपी नींव के ऊपर ही सम्पूर्ण शिक्षारूपी इमारत खड़ी रहती है इसीलिये बालक की प्राथमिक शिक्षा के स्तर का मजबूत होना बहुत जरूरी है। इसके लिए प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का मजबूत व अपने कार्यो से सन्तुष्ट होना अति आवश्यक है। भारत देश में प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर बहुत से शोध कार्य हो चुके है जो स्पष्ट करते है कि प्राथमिक स्तर पर कार्य करने वाले अध्यापको की व्यावसायिक सनतुष्टि को बहुत से तत्व/क्षेत्र प्रभावित करते है जैसेः- आयु, लिंग, जाति शैक्षणिक योग्यताऐं, सामाजिक आर्थिक स्तर, अनुभव पद स्थिति आदि।

इसी तरह पाश्चात्य देशें में भी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर बहुत से शोध कार्य हो चुके है। इसी तरह ही पाश्चात्य देशों में व्यावसायिक सन्तुष्टि व व्यक्तित्व के प्रकारों पर भी शोध कार्य हो चुके है जो स्पष्ट करते है कि व्यक्तित्व की विशेषताएँ व्यक्ति की व्यावसायिक सन्तुष्टि को प्रभावित करती है। परन्तु भारत देश में इस तरह के शोध कार्य अभी नही हुए है जो स्पष्ट करते है कि व्यक्तित्व के प्रकारों व आकांक्षा स्तर व्यक्ति की व्यावसायिक सन्तुष्टि को प्रभावित करते है। इसी अभाव की पूर्ति हेतु प्रस्तुत अध्ययन का एक संक्षिप्त प्रयास किया गया है जो स्पष्ट करता है कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के व्यक्तित्व कारकों व आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर प्रभाव पड़ता है।

इस तरह के शोध कार्य राजस्थान के अजमेर क्षेत्र में विशेषतया नही किया गया है इसी कारण यह एक प्रयास है।‘‘प्राथमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन’’ किया जाये।

7 MAJOR HYPOTHESIS OF ANY

प्रस्तावित शोध की परिकल्पनाएँ

किसी भी शोध कार्य को सीमित करने के लिए एंव मार्ग को दिश प्रदान करने के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण करना आवश्यक है क्योंकि बिना परिकल्पनाओं के अवांछित एवं अनुपयोगी आकड़ों को एकत्रित कर लिया जाता है इसीलिये परिकल्पना से उचित एवं उपयागी आकंड़े एकत्रित करने में सहायता मिलती है तथा समय के साथ धन की भी बचत होती है।

गुड व हैट (**God and hatt**) के अनुसार

''परिकल्पना इस ज्ञान का वर्णन करती है कि हम क्या देखना चाहते है परिकल्पना भविष्य की और देखती है। यह एक तर्क पूर्ण वाक्य है जिसकी वैधता की परीक्षा की जा सकती है। यह सही भी सिद्ध हो सकती है और गलत भी।''

शोधार्थी ने प्रस्तावित लघु शोध में प्राथमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन को ज्ञात करने के लिए निम्न परिकल्पनाएँ बनाई गई है।

1. प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि औसत से अधिक।
2. प्राथमिक शिक्षकों की व्यक्तित्व विशेषताओं का उनकी व्यवसायिक सन्तुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
3. प्राथमिक शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर कोई सार्थ प्रभाव नहीं है।
4. प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का उनके स्वतंत्र चरो (लिंग भेद शहरी व ग्रामीण, राजकीय व गैर राजकीय, शैक्षणिक योग्यता, सामाजिक आर्थिक स्तर) में कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
5. प्राथमिक शिक्षकों की व्यक्तित्व का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर उनके स्वतंत्र चरो (लिंग भेद शहरी व ग्रामीण, राजकीय व गैर राजकीय, शैक्षणिक योग्यता, सामाजिक आर्थिक स्तर)का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
6. प्राथमिक शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर उनके स्वतंत्र चरो (लिंग भेद शहरी व ग्रामीण, राजकीय व गैर राजकीय, शैक्षणिक योग्यता, सामाजिक आर्थिक स्तर) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
7. प्राथमिक शिक्षकों की व्यक्तित्व व आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि के सम्बन्धों को संयुक्त रूप से प्रभावित करती है।

8. MATERIAL AND METHODS / RESEARCH METHODOLOGY

8.1 A OPERATIONAL DEFINITIONS OF KEY TERMS

1. **व्यक्तित्वः**– अंग्रेजी भाषा के Personality शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Persona शब्द से हुई है। लैटिन भाषा में .Persona शब्द उस नाटकीय पोशाक व मुखोटे के लिए प्रयोग किया जाता है जो अभिनेता नाटक में अभिनय हेतु पहना करते है। इस प्रकार उत्पत्ति के हिसाब से देखे तो व्यक्तित्व का अर्थ मनुष्य की बाह्या शारीरिक आकृति से होता है परन्तु व्यक्तित्व की यह व्याख्या सन्तोषप्रद नही है क्योंकि व्यक्ति की बाहरी आकृति ही व्यक्ति के वास्तविक व्यक्तित्व का बोध नही कराती है। यदि ऐसा मान भी ले कि व्यक्तित्व से तात्पर्य बाह्य आकृति से है तो अनेक उदाहरण ऐसे भी मिल जायेगे जिनकी बाह्य आकृति अनाकर्षण होते हुये भी उनका व्यक्तित्व उच्च रहा है।

जैसेः– महात्मा गांधी, रविन्द्र नाथ टैगर, विनोबा भावे, लिंकन के उदाहरण हमारे सम्मुख प्रस्तुत है। इनके उदाहरण से स्पष्ट है कि व्यक्तित्व केवल बाह्य सरंचना से ही निर्धारित नही होता है। अपितु उसके लिये कुछ आन्तरिक गुणों का होना भी आवश्यक है। बिना आन्तरिक गुणों के व्यक्तित्व का विकास सम्भव नही है। प्रोफेसर युंग ने व्यक्तित्व को दो रूपों में बताया है अन्तर्मुखी व बर्हिमुखी व्यक्तित्व जिन्हें हम शोध कार्य में ले रहे है।

2. **आकांक्षा (Aspiration) :**– जहाँ जीवन है वहां आकांक्षा है मानव जीवन एक रहस्य है। आकांक्षा का स्तर प्रत्येक व्यक्ति का अलग अलग हाता है। प्रत्येक व्यक्ति के मन में कुछ भावनाएँ व इच्छाएँ छिपी रहती है जिनको वह पूर्ण करना चाहता है आकांक्षा का स्तर उच्च व व्यापक होता है। आकांक्षा का स्तर स्वाहित के साथ मानवहित से भी होता है। आकांक्षाएँ वह दर्पण है जिनसे समाज का सही रूप प्रतिबिम्बित होता है आकांक्षा किसी भी समाज की सोच व स्तर क आभास को स्पष्ट करती है।

3. **विद्यालय के प्रकारः**– राजकीय व निजी विद्यालय जो अजमेर क्षेत्र के है को लिया जायेगा।

4. **क्षेत्रः**– ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में स्थापित राजकीय व निजी विद्यालय जायेगा।

5. **लिंगभेदः**– राजकीय व गैर राजकीय विद्यालय में प्राथमिक स्तर पर कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षकों को सम्मिलित किया जायेगा।

6. **सामाजिक आर्थिक स्तरः**– विभिन्न राजकीय व निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक जो विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले है को सम्मिलित किया जायेगा।

7. **शैक्षणिक योग्यताः**– राजकीय व निजी क्षेत्रों में कार्यरत प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शैक्षणिक योग्यता (B.STC., B.Ed, M.Ed) को सम्मिलित किया जायेगा।

8.2 RESEARCH DESIGN METHODOLOGY

शोध विधिः– प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्याः– किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिए यह संभव नही है कि पूरी जनसंख्या के समग्र व्यक्तियों को अपनी खोज का विषय बना सके इसीलिए जनसंख्या में से कुछ ऐसी इकाईयों का चयन कर लेते है जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करें और जिन पर किए गए अध्ययन के आधार पर समग्र के लिए निष्कर्ष निकाले जा सकें।

न्यादर्शः– शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में अजमेर जिले के राजकीय व निजी विद्यालय, में कार्यरत 320 शिक्षकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया जाएगा।

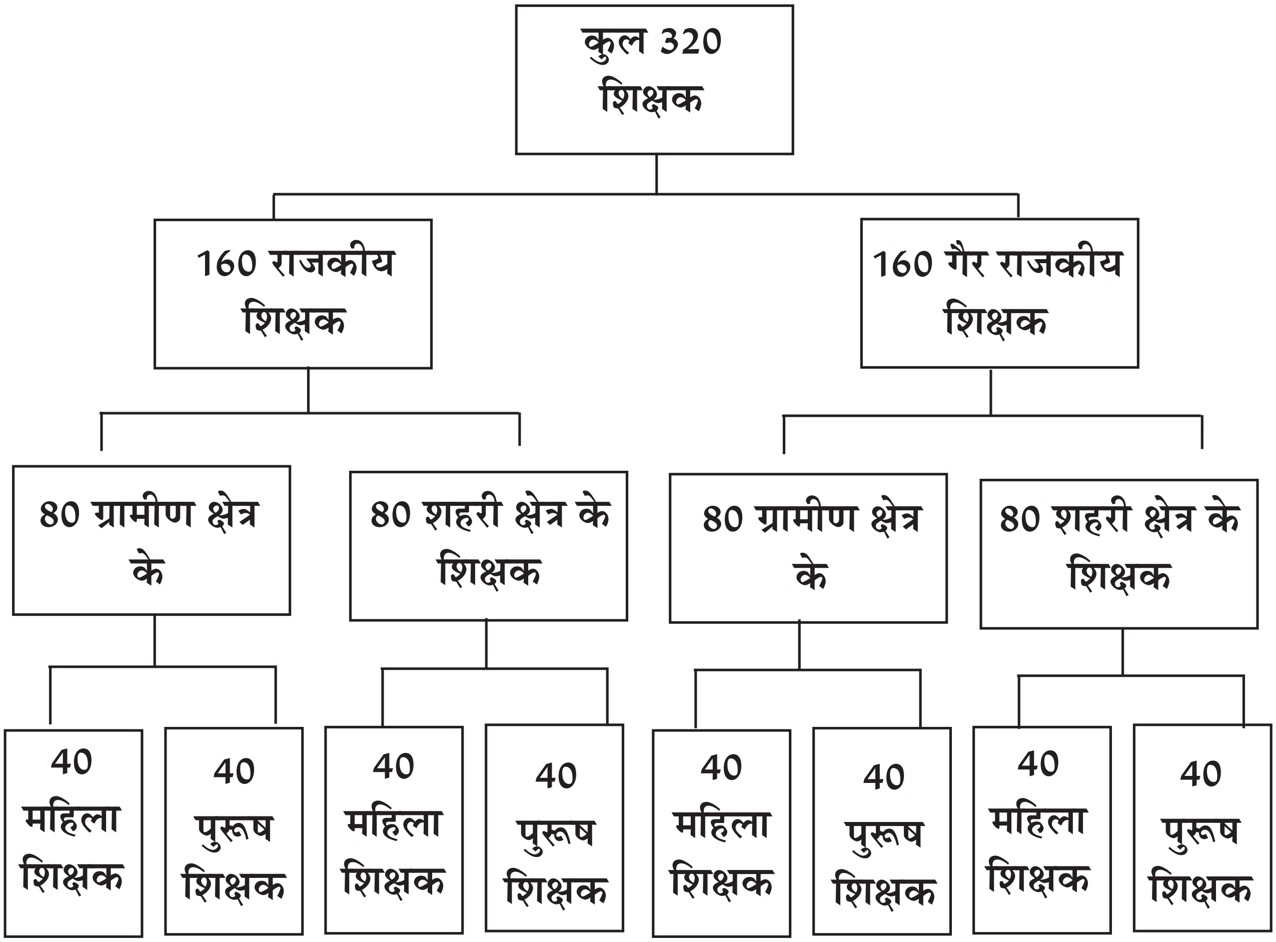

8.3 Tools to be used (अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण)

प्रस्तुत शोध कार्य में दो उपकरण तो मानकीकृत का उपयोग किया जाएगा एवं एक उपकरण स्वयं निर्मित किया जायेगा।

1. Dr. R.A. Singh द्वारा निर्मित व मानकीकृत उपकरण अन्तर्मुखी व बर्हिमुखी परीक्षण।
2. Dr. Pramod Kumar and D.N. Mutha द्वारा निर्मित व मानकीकृत उपकरण अध्यापक कृत्य सन्तोष प्रश्नावली (Teacher Job satisfaction Questionnaire)
3. आकांक्षा स्तर का उपकरण स्वयं बनाया जायेगा।

8.4 Statistics Techniques (साख्यिकी विधियाँ)

इस शोध कार्य में माध्य एस.डी., टी टेस्ट व सहसम्बन्ध का उपयोग किया जायेगा।

8.5 Variable (चर)

आक्षित चर – व्यावसायिक सन्तुष्टि, व्यक्तित्व और आकांक्षा स्तर।

स्वतंत्र चर – लिंग भेद शहरी एवं ग्रामीण राजकीय व निजी, शैक्षणिक योग्यता सामाजिक आर्थिक स्तर।

8.6 Delimitation of the study (अध्ययन की परिसीमाएँ)

समयाभाव व धनाभाव एवं आय सीमित साधनो के कारण शोध को परिसीमित किया गया है।

1. शोध अध्ययन हेतु केवल अजमेर जिले के राजकीय व निजी विद्यालयों का लिया जाएगा।
2. यह अध्ययन राजकीय व निजी विद्यालयों में कार्यरत 320 शिक्षकों तक ही सीमित रखा जाएगा।
3. इस अध्ययन में केवल प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का ही अध्ययन किया जाएगा।

अध्याय का वर्गीकरण

1. **प्रथम अध्याय**

   समस्या का पृष्ठभूमि – प्रस्तावना

   समस्या का औचित्य

   समस्या कथन

   समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का स्पष्टीकरण

   अध्ययन की परिकल्पनाएँ

   प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

   अध्ययन की परिसीमाएँ

2. **द्वितीय अध्याय**

   सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन प्रस्तावना

   सम्बन्धित साहित्य का अर्थ

   सम्बन्धित साहित्य का महत्व

   सम्बन्धित साहित्य के लाभ

   सम्बन्धित साहित्य का स्त्रोत

   पूर्व में किए गए शोध अध्ययनों का विवरण

3. **तृतीय अध्याय**

   अध्ययन विधि

   प्रयुक्त चर

   जनसंख्या एवं न्यादर्श

   प्रयुक्त उपकरण

   प्रयुक्त सांख्यिकी

4. **चतुर्थ अध्याय**

समंको का संकलन

समंको का सारणीयन

संमको का विश्लेषण एवं व्याख्या

5. **पंचम अध्याय**

शोध के निष्कर्ष

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

भावी अध्ययन हेतु सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

BIBLO GRAPHY

1. भट्टाचार्य, जी.सी.(1990) ' अध्यापक शिक्षा ' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. भटनागर सुरेश (1991) ' शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग ' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. गैरत हैनरी (1971) ' मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी ' बम्बई वकीय फेवर एण्ड सिमन्स प्रा.लि.ए., बम्बई।
4. माथूर एस.एस. (1992) ' शिक्षा मनोविज्ञान ' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. पारसनाथ राय (1992) ' अनुसंधान परिचय ' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
6. पाण्डेय राशकल (1998) ' शिक्षा मनोविज्ञान ' आर.एल. बुक डिपो, आगरा।
7. पाठक पी.डी. (1997) ' शिक्षा मनोविज्ञान ' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
8. सिंह, आलपोर्ट, कुमार अरूण (1956) ' शिक्षा मनोविज्ञान ' भारती भवन, नई दिल्ली।
9. शर्मा सत्यपाल (2001) ' शिक्षा का समाजशास्त्र ' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
10. शर्मा रामपाल (1995) ' अधिगम का मनोविज्ञान ' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
11. शर्मा बी.एन शर्मा राजकुमारी, शर्मा राजनीश (2016) विद्यालयी समाजीकरण व पहचान राधा प्रकाशन मन्दिर , आगरा
12. शर्मा आर. ए. (2002) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रकिया , आर लाल बुक डिपो, मेरठ
13. श्रीवास्तव डी, एन . (2002) मनोवैज्ञानिक निर्धारण विनोद पुस्तक मन्दिर , आगरा ।
14. Annierah M. (2013) – work Performance and job Satisfaction among

    teachers .

    International Journal of Humanities and social Science Vol. 3 No. 5

15. Ayan S. (2010) The Relation between the level of job Satisfaction and types of personality in high school teachers.

    Australian journal of teachers education vol. 3 issue 5

16. Ghosh M. (2013) Job Satisfaction of teachers working at the Primary school.
International Journal of humanities and social Science vol. 2 issue 7
17. Kumar A. (2015) Job Satisfaction among female Teachers : A comparative study
International Journal of care engineering and management vol 2 issue 5
18. Marshall I.A (2014) Principle Leadership style and teacher Satisfaction among a sample of secondary school teachers in Barbados caribbean educational research journal vol 2 no.2

19. Rani B.S. and Neeraj P. (2014) Job stratification of Primary School Teachers
IJMSS vol 2 issue 01

20. Rao M.N. and samiullah S. (2016) job Satisfaction and Mental Health among School teachers
IJHSSR vol 2 issue 2

21. Sharma P. And Kour P.(2013) Acorrelational of Personality types and performance of the teachers trainers in the teachers training programme.
IJIR vol 2 issue 5

22. Venkatesh K. (2016) Job Satisfaction among primary School teachers with respect to Age, Gender , Experience
IJOI vol 3 issue 3